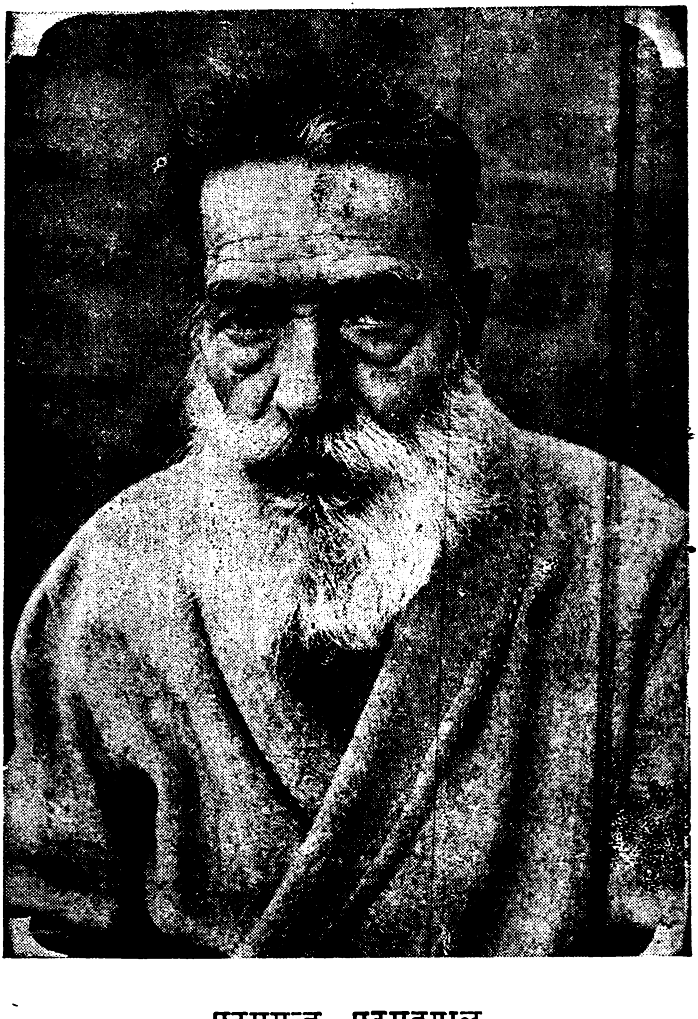

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

शोक समाचार

हम यह समाचार बड़े दुख के साथ दे रहे हैं कि सन्त सेवा सिंह जी दिल्ली निवासी दिनांक २२ मई १९७६ को अपने निवास्थान E- १२०८, नेता जी नगर, पर चोला छोड़ गये। चोला छोड़ने से दो महीने पूर्व आप सड़क पर दुर्घटना ग्रस्त हुए, सिर पर चोट आई, इलाज किया और स्वस्थ हो गये। लेकिन २२-५-७६ को एक दम कष्ट वढ़ गया। उलटी की, हस्पताल ले जाते समय शरीर छूट गया

आप ५७ वर्ष के थे। सरकारी कर्मचारी थे होमियोपैथिक डाक्टर भी थे और गरीवों का इलाज मुफ्त करते थे। उनका जीवन सादा, और सच्चा था। आप आत्म अनुभव की साक्षात मूर्ति थे। हजूर परम दयाल जी महाराज के परम भक्त थे। २५-४-७६ को श्री नन्द दयाल जी के मकान पर महाराज जी का सत्संग सुना। आप मानवता प्रचारक सभा दिल्ली के सदस्य भी थे। हमारी प्रार्थना है कि मालिक उनको अपनी गोद में ले कर शान्ति प्रदान करे और उनके परिवार को इस महान दुख के सहन करने की शक्ति दे।

मासिक—

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

३	जुलाई १९७६	संख्या

आशा

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़

राधास्वामी ! आशा भी एक विचित्र वस्तु है। यह जीवन को जीवन बना देती है। इससे हर एक जीवन आनन्दमय बन जाता है। दूसरे इसकी ओर खिंचे रहते हैं। आशा में बल है। आशा में उत्साह है, आशा में आनन्द है। आशा जीवन को लिए जा रही है। एक आशा के सहारे जीवन चलता है। आशा समाप्त हो गई, आशा न रही तो जीवन भी समाप्त हो जायेगा। आपने सुना होगा। जब प्रेमी सफल न हुआ, इसको अपने प्रीतम से मिलने की आशा न रही तो इसने आत्मघात कर लिया। ऐसी घटनायें प्रतिदिन देखने में आती हैं।

आशा नहीं है तो जीवन नहीं है। आशा के बिना जीवन रस हीन हो जाता है। इसलिए आशा रखो। खूब आशा करो। आशा को बढ़ाओ। आशा बढ़ती जायेगी। यह ऐसी वस्तु है। एक आशा स्वार्थ

की होती है। संसारी होती है। दूसरी आशा प्रमार्थिक होती है।

हर एक व्यक्ति को इस संसार में कोई न कोई आशा अवश्य है। किसी को संतान की आशा है, किसी को धन की आशा है, किसी को व्योपार की आशा है और किसी को अपने नाम की आशा है कि मेरा नाम संसार में प्रसिद्ध हो जाये।

संतान मिल गई। एक दो बच्चे हो गये। अब आशा बदल गई, अब आशा है कि इनको पढ़ाऊंगा। इनको किसी अच्छे काम पर लगाऊंगा। मेरा बुढ़ापा आयेगा, मुझे इनसे आशा होगी।

धन मिल गया। निर्वाह हो रहा है। अब आशा ने हाथ पांव पसारे कि धन और चाहिए, कुछ बैंक में रखा जाये, अपना मकान बनालूं आदि २ आशा ने उन्नति की। आशा बढ़ रही है।

व्यापार चल रहा है। कारोबार हो रहा है। जीवन अच्छा व्यतीत हो रहा है। लेकिन आशा समाप्त नहीं हुई बल्कि आशा और बढ़ी कि मैं व्यापार को बढ़ाऊंगा, कारखाना लगाऊंगा। खूब काम करता है। उन्नति करता है।

किसी ने अपने हाथ से तसबीर बनाई। किसी ने कोई पुस्तक लिखी। किसी विज्ञानिक ने कोई नई चीज़ बनाई, किसी ने पर्वत की ऊंची से ऊंची चोटी को पार किया। किसी ने नया देश खोज निकाला। किसी ने नया सियारा देख लिया। किसी डाक्टर ने नई प्रकार की दवाई बीमारी की बना डाली। क्या इन सबकी आशा समाप्त हो गई ? नहीं, नहीं। विलकुल नहीं ! इनकी खोज जारी है। वे लगातार अपने यत्न में लगे हुये हैं। आशा इनको आगे लिए जा रही है। आशा महा बलवान शक्ति है।

हर एक जीव को आशा लिए जा रही है। यह आशा कभी समाप्त होती दिखाई नहीं देती। कई महापुरुष हैं जिनको परमार्थ की आशा है। वे गरीबों की सहायता करते हैं, भूखे को भोजन और नंगे को कपड़ा देते हैं। दान खूब देते हैं। बच्चों को शिक्षा के लिए सहायता करते हैं, विधवाओं की सहायता करते हैं। इनको ईश्वर के दर्शनों की अभिलाषा है, भक्ति करते हैं। ज्ञानी हैं, ध्यानी हैं, अन्तरी अभ्यास

भी करते हैं। आनन्द लेते हैं। विलकुल शान्त स्वरूप हैं।

ऐसे महापुरुषों की आशा समाप्त हो चुकी है। प्रश्न उठता है फिर वे जीवित कैसे हैं ? जब आशा समाप्त हो चुकी है क्या आशा के बिना जीवन है ? क्या आशा के बिना कोई जीवित रह सकता है ? हां ! हां !! रह सकता है। आशा के बिना भी जीवन है। असल में यही जीवन है, जिसको जीवन कहा जासकता है जो आशा के बिना जीवन हो।

जिस महापुरुष की सब प्रकार की आशायें पूर्ण हो चुकी हैं। कोई आशा बाकी नहीं है। वह कोई काम आशा से नहीं करता है। वह अपने सब काम इच्छा रहित होकर आशा न रखकर करता है। वह अपने सब काम मौज अधीन होकर करता है। प्रभु को मौज, सब काम एक कर्तव्य समझ कर करता है। इसके सब काम निवृत्ति के लिए होते हैं। इसकी प्रवत्ति भी निवृत्ति होती है। इसको अपने किसी काम से फल की इच्छा नहीं होती। न ही वह किसी फल की इच्छा रखता है। इसके सब काम निष्काम होते हैं।

आप भी इस बात पर अमल करके देख सकते हैं। आशारहित हो जाओगे। असली आनन्द आपको मिलेगा। इसपर अमल करके देख लो। आपको सच्चाई का ज्ञान हो जायेगा। यदि आप दुकानदार हैं, कल प्रातः जब दुकान खोलो यह समझकर काम करना कि मैं तो कर्तव्य पालन कर रहा हूं, बच्चे हैं, स्त्री है, इनका पालन पोषन आवश्यक है। यह मेरा कर्तव्य है। कर्तव्य समझ कर काम मैं इनके पालन-पोषन के लिए काम कर रहा हूं। मेरा यह कर्तव्य है। दुकान तो इनकी है। मैं काम करनें वाला हूं। इस विचार को दृढ़ कर लो। फल की इच्छा न करो आपका काम बन जायेगा।

गीता चौथा अध्याय :—शलोक 21

उम्मीदो होश से न है कुछ लगन।
जो काबु में रहे मन तो कबज़े में तन ॥

अध्याय तीसरा शलोक 8

जो है फरज़ तेरा कर उसपर अमल।
कि तरके अमल से है बहतर अमल।

अध्याय दूसरा शलोक 47

किये जा अमल और न ढूंड इसका फल।
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल।

यह गीता की शिक्षा है। ज्ञान का सार है। मुक्ति पाने की कुंजी है, निष्काम कर्म करना फल की इच्छा न रखना। इसी जीवन को जीवन कहते हैं।

जो पायेगा इसी जिन्दगी में यह कमाल।
मिले इसको शान्ति और पाए दयाल।
फिकर न इसको सताय कभी।
आशा न हो इसको किसी चीज की।
यारब कब यह हालत मिलेगी मुझे।
कर दे बेड़ा पार भव से मुझे।

"सब को राधास्वामी"

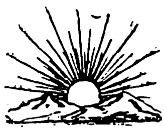

सौ वर्ष की इवादत से ढ़ाई घड़ी का सत्संग उत्तम भाग २

सत्संग हुज़ूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ६ फरवरी १९६९
(स्थान अटारसी मध्य प्रदेश)

राधास्वामी ! तुम लोगों नें आज सत्संग कराने के लिए विवश किया । अब तुम स्वयं देखो कि क्या तुम लोग सत्संग के अधिकारी हो ? कितने आदमी थे रात को जो रोते थे कि बाबा जी ! आप मत जाओ और अब कितने आदमी सत्संग में आये हैं । तुम सोचो कि तुम ने भी गलती नहीं की ? अब मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तुम ने गलती नहीं की ? मैं अपनी नीयत से सत्संग करता हूं । संसार सत्संग का अधिकारी नहीं है । ये सब मनमत हैं । सत्संग

किसे कहते हैं। स्वामी जी की बाणी के आधार पर सुनो :—

सतसंग किस को कहत हैं, सो भी तुम सुन लो।
सतनाम सतपुरुष का, जहां कीर्तन हो।

वह कहते हैं कि जहां सत नाम और सतपुरुष का कीर्तन होता है उसका नाम सत्संग है। संसार ने तो यह समझा हुआ है कि शब्द गाना, बाजा बजाना, छैने वजाना और खड़ताल वजाना ही कीर्तन है। अब प्रश्न यह पैदा है कि सतपुरुष कौन है और कीर्तन किसका किया जाता है। क्योंकि गाने बजाने और शब्द पाठ का सम्बन्ध सिखों में मौजूद है। इसलिए आज सतपुरुष की व्याख्या सुखमनी साहिब के आधार पर करना चाहता हूं।

सति पुरखु जिनि जानिया, सतिगुरु तिस का नाउ।
तिस कै संगि सिख उधरै, नानक हरि गुण गाउ।

वह कहते हैं कि सत्गुरु वह है जिसने सतपुरुष को जान लिया है और वही सत्गुरु सत्पुरुष का कीर्तन कर सकता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सत्संग में सत्पुरुष का कीर्तन होता है। कीर्तन क्या है ? किसी के गुण गाना। विचार करना, ध्यान करना और उसमें आनन्द लेना। सुखमनो साहिब के

अनुसार यह कीर्तन कौन करा सकता है? सत्गुरु। सत्गुरु कौन है? जो सतपुरष का कीर्तन कराता है। सुखमनी साहिब के वचन सुनो। सत्गुरु किस सतपुरुष का कीर्तन करेगा?

सतिगुरु सिखकी करै प्रतिपाल, सेवक कउ गुरु सदा दयाल।
सिखकी गुरु दुरमति मल हरे, गुरु बचनी हरिनाम उचरे।

वह सत्गुरु सदा दयाल होता है। वह अपने शिष्य पर दया करता है, उसको पालता है और उसको भेद बताता है। वह शिष्य के ग़लत विचार और उसके अज्ञान को दूर करता है। सत्गुरु अपने बचनों और अपने हित द्वारा शिष्य की सहायता करता है।

सतिगुरु सिख के बंधन काटे, गुरु का सिख, विकारते हाटे।

गुरु जीव के बुरे विचारों और बुराईयां जो इसके दुख का कारण बनते हैं वह उनको अपने बचनों से दूर करता है और उसके अज्ञान बंधन को काटता है।

सतिगुरु सिख कउ नाम धन देइ, गुरु का सिख वड़भागी होई।
सतिगुरु सिख का हलत पलत सवारे, नानक सतिगुरु सिख कउ जीआ नालि समारे।

सत्गुरु अपना प्रेम देकर उसको सुधारता है।

गुरु कै गृहि सेवक जो रहे, गुरु की अगिआ मन महि सहे।

आपस कउ करि कछु न जनावे, हरि हरि नाम रिदै सद।
धिआवे।

मनु बेचै सतिगुरु कै पास, तिस सेवक के कारज रास।

सत्गुरु बचन कहता है। जो शिष्य उसके बचनों को मानता है। शिष्य गुरु के पास मन को बेचता है और वह मालिक को प्राप्त करता है। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का।

सेवा करत होई निहकामी, तिस कउ होत परापत सुआमी।

जो आदमी निष्काम हो कर सेवा करता है उसको स्वामी मिलता है। तुम लोग तो कोई बेटा मांगता है, कोई धन मांगता है कोई कुछ मांगता है तो तुम निहकामी कैसे हुये? तुमको वह मंज़ल नहीं मिल सकती। तुम स्वयं सोचो यह मेरी लिखी हुई नहीं है। यह गुरु बाणी है। जो आदमी गुरु के पास जाकर साँसारिक वस्तुयें मांगता है वह निहकामी नहीं है और न ही उसको स्वामी मिल सकता है।

अपनी कृपा जिस आपि करेइ, नानक सो सेवक गुरु की मति
लेई।

सेवक का काम है गुरु की समझ और मत लेना। जब तक तुम वह समझ प्राप्त नहीं करोगे बेशक तुम गुरु के पांव धोकर पीते रहो या उसके मकान में

झाड़ू देते रहो या उसका डेरा या मंदिर बनाते रहो तुमको परमार्थिक लाभ नहीं मिल सकता। सचाई तो यह है कि जिस पर उसकी दया होती है उसको ही ऐसे विचार आते हैं दूसरे को नहीं।

बीस बिसवे गुरु का मन मानै, सो सेवक परमेसुर को गति जानै।

गुरु का मन क्या है ? गुरु के विचार और भाव और बीस बिसवे क्या है ? पूरे सोला आने अर्थात शत प्रति शत। जो उसकी बात को पूर्ण रूप में मान लेता है उसको लाभ पहुंचता है। अब तुमने मुझे रोका और मेरी आज्ञा नहीं मानी। क्या तुम सेवक हो या गुरु मुख हो ? नहीं ! तुम तो मनमत हो।

सो सतिगुरु जिस रिदै हरि नाउ। अनिक बार गुरु कउ बलि जाउ।।

सरब निधान जीआ का दाता। आठ पहर पार ब्रह्म रंगि राता।

ब्रह्म महिं जनु जन महि पार ब्रहम, एकहि अपि नहीं कछु भरम।।

ये सतगुरु के गुण हैं। जिसकी यह दशा होती है वह सत्गुरु है।

सहस सियानप लिया न जाईऐ, नानक ऐसा गुरु बड़ भागी पाईऐ।।

वह कोई ही बड़भागी गुरु होता है जो इस अवस्था को प्राप्त होता है या जो *Oneness* में आया हुआ होता है ।

सफल दरसन पेखत पुनीत, परसत चरनगति निरमल रीति ।

ऐसे गुरु के दर्शन करने और चरण स्पर्श करने से मन को शान्ति मिलती है और मन पवित्र होता है ।

भेटत संगि राम गुन रवे । पारब्रह्म की दरगह गवे ॥
सुनि करि बचन करन आधाने । मान संतोख, आतम पतिआने
पूरा गुरु अख्यो जा का मंत्र । अमृत दृष्टि पेखै होइ संत ॥
गुण बिअंत कीमति नहीं पाई । नानक जिसु भावै तिस लए
मिलाइ ॥

जिहबा एक उसतति अनेक । सति पुरख पूरन बिबेक ॥

पूर्ण विवेक है पूर्ण ज्ञान । जिस सत्संग में जीवों को पूर्ण ज्ञान दिया जाता है और पूर्ण विवेक दिया जाता है, जो बचन कहे जाते हैं जिनसे पूर्ण विवेक प्रगट होता है उस सत्संग का नाम सत्संग है । मैं सत्संग कराता हूं । हृदय सचाई प्रिय है । पाखण्ड जाल से बचने का यत्न करता रहता हूं । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तू सत्गुरु है और क्या तूने सतपुरुष को जान लिया है ? हां । मैंने जीवन में

बहुत सत्संग कराये और बहुत किताबें लिखीं, संसार इनको पढ़े और सोचे कि क्या इनमें जीवन व्यतीत करने का भेद मिलता है ? क्योंकि मैंने जीवों को या अपने जैसे दीवानों को जीवन व्यतीत करने का सच्चा भेद बताया है। क्या बताया है ? कि मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करो। अपने घरों में शान्ति रखो, घृणा द्वेष और शत्रुता को त्यागो अपने मन पर सवारी करो, अपने अज्ञान को दूर करो और सुमरिन ध्यान करो, क्योंकि मैंने अपने जीवन में लोगों को समझ और विवेक दिया है, तुम्हारे भ्रम वहम मिटाने का यत्न किया है इसलिए मैं कहता हूं कि मैं सत्गुरु हूं। संसार में कहीं भी सतपुरुष का कीर्तन नहीं होता यद्यपि पाचों उगलियां बराबर नहीं होती मगर प्रत्यक्ष हम देखते हैं कि कोई भी सचाई नहीं बताता। हर एक धर्म और पंथ वाला तुमको सचाई न बताके अपने डैरों पंथों और धर्मों के पीछे लगाने का यत्न करता है।

आज प्रातः एक महिला मेरे पास आई और कहने लगी कि आज से डेढ़ महीना पहले बाबा जी ! आप आये और मुझे कहा कि तेरा पति पांच छः

हज़ार रुपया कमाकर ला रहा है। आपकी वह बात बिल्कुल ठीक निकली। एक और आदमी ने मुझे बताया कि आप प्रकट हुये और मुझे कहा कि तुम घर वापिस चले जाओ तुम्हारे बच्चे बीमार हैं। मैंने घर जाकर देखा तो मेरे बच्चे ठीक बीमार थे। अब तुम सोचो कि ऐसी कोई न कोई बात सब के साथ होती रहती है। लेकिन कोई तुमको सचाई नहीं बताता और तुम लोगों को अज्ञान में रखकर सब तुमसे मान प्रतिष्ठा और धन लेते हैं। मैं संसार को सच्चा ज्ञान और सच्चा विवेक देने के लिए आया हूं कि ऐ मानव। कोई बाहर से तेरे अन्तर नहीं आता क्योंकि मैं न उस महिला को कुछ कहने के लिए गया और न उस आदमी को और न ही मैं फकीर चन्द पुत्र पण्डित मस्त राम इन दोनो के अन्तर गया और न ही मुझे ज्ञात है कि ये कौन हैं। इसलिए क्या आजतक तुमको सब धर्मों और पंथों ने अज्ञान में रखकर, मूर्ख नहीं बनाया और तुमसे धन धान्य और मान प्रतिष्ठा नहीं लिये। आंखें खोलो। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु। कुल मालिक या अनामी धाम से इस फकीर के चोले में संसार को सचाई बताने और

यह सच्चा ज्ञान देने के लिए आया हूं कि ऐ मानव ! यह तेरी सहायता करने वाला जो कुछ भी तेरे अन्तर प्रकट होता है वह तेरा ही मन है, तेरी हो आत्मा है तेरा ही विचार और तेरा ही विश्वास है, तूं भूल और भ्रम में है। तुमको असलियत का पता नहीं। तूं संसार की आशाओं में ग्रस्त होकर इस काल और माया के चक्कर में आकर भ्रम में आया हुआ है। सोच लो मैंने क्या कहा। मैं सत्संग कराता हूं। अपने आपसे पूछता हूं कि क्या तूं सचमुच सत्गुरु है और संसार को सच्चा ज्ञान देता है ?

हां ! सत्गुरु, नाम है सच्चे ज्ञान का। मैंने सत्गुरु को विवेक कर लिया है। मैं तुमको वहां ले जाना चाहता हूं जहां हज़ूर दातादयाल जी मुझे ले गये मगर तुम वहां जाना नहीं चाहते। मैं तुमको कहां ले जाना चाहता हूं ?

सुनो :-

चौथा पद सच खण्ड कहावे। महासुन के पार रहावे।
महांसुन वह सन्तन भाखी। अक्षर से वह आगे ताकी ।।

हज़ूर दातादयाल जी महाराज मुझे चौथे पद में ले जाने का यत्न करते हैं। मेरे नाम उनके जो शब्द हैं उनमें था चौथे पद का इशारा। लेकिन मैं जा

नहीं सकता था। क्यों ? मेरे अन्तर हजूर दातादयाल जी महाराज का रूप, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का रूप या हजूर महाराज जी का रूप और कई प्रकार के रंग रूप प्रगट होते थे और मैं उनको सत मानता था इसलिए मेरी सुरत उनमें लगी रहती थी। क्योंकि मैं इन रूपरगों को सत मानता था, इसलिए मैं आगे नहीं जा सकता था। अब मुझे यह पहुंचाने वाले आप सत्संगी हैं जो यह कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होकर उनकी सुरतें चढ़ा देता है, अन्त समय उनको ले जाता है, दवाईयें बता जाता है और पुत्र दे जाता है आदि २। क्योंकि मैं नहीं होता तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो हजूर दातादयाल जी महाराज का रूप प्रगट होता है, वह आप लोगों के अनुभवों ने सिद्ध कर दिया कि वह मेरे अपने ही मन का बनाया हुआ था तो फिर मैं इस मन को छोड़कर असली मालिक को या सतगुरु को ढूंडने के लिए विवश हो गया और अब मैं चौथे बल्कि पांचवें पद में रहने का यत्न करता रहता हूं। दया तो मेरे सतगुरु जी महाराज की है जिन्होंने मुझसे यह खेल खिलाया। क्योंकि इस समय

के धार्मिक पंथिक और गद्दियों के गुरु और उनके पैरोकार इस भेद से बिल्कुल कोरे हैं और सतनाम और सतपुरुष का कीर्तन कोई नहीं करता। इसलिए प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया ताकि मैं इस भेद को खोल जाऊं और जिनके भाग्य में है वे मेरी बात को समझकर अपना जीवन क्रियात्मिक बनायें और जिनके भाग्य में नहीं है उनके लिए न मैं और न कोई और कुछ कर सकता है। जिस पर उस मालिक की दया होती है वही इस ओर आता है दूसरा नहीं आ सकता। मेरे ज़िम्मे गुरुऋण है :—

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दूखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी॥

अब मुझे समझ नहीं आती कि मैं कैसे सबको अंग लगाकर ले जाऊं। क्या मैं अपनी छाती से लगाऊं? मेरी छाती तो इतनी बड़ी नहीं है। इसलिए मेरी बाणी को ध्यान से सुनो और अमल करो। जो मेरी बाणी को ध्यान से सुनेगा और उसपर अमल करेगा वह पार हो जायेगा। मैं सतगुरु का कर्तव्य

पूरा करता हूं। कैसे ? सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का और पूर्ण विवेक का और वह मैं अपने सत्संगों में देता रहता हूं ताकि जीव यदि मेरी बात को समझ जायें तो उनको शान्ति मिल जाये और अज्ञान में न आकर लूट से बच जायें। जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर कई प्रकार के चमत्कार कर जाता है। यदि मैं भी परदा रखता तो जितनी इच्छा होती धन इकट्ठा कर लेता। मगर मेरी आत्मा मुझे आज्ञा नहीं देती। ऐ संसारवालो ! मुझे कोई पता नहीं और न ही मैं किसी के अन्तर जाता हूं। जिसकी इच्छा करे मेरा सत्संग सुने, जिसकी इच्छा करे मेरी कोई पुस्तक पढ़े, जिसकी इच्छा न करे मत पढ़े। मुझे न मान और प्रतिष्ठा की आवश्यकता है और न धन की। मेरे जिम्मे तो सत्संग कराने का कर्तव्य था। सिवाय सत्गुरु के दूसरा कोई सत्संग नहीं करा सकता, सत्गुरु वह है जो सतनाम में रहता है और सतनाम में वह रह सकता है जिसको यह ज्ञान हो जाये कि ये जितने भी रंगरूप अन्तर में प्रगट होते हैं, यह सब माया है और कल्पित हैं। मगर हम लोग तो यह समझते हो कि अन्तर में हजूर बाबा सावन सिंह जी

महाराज आ गये, स्वामी जी महाराज आ गये या बाबा फकीर आ गया या राम या कृष्ण आ गये यद्यपि उनमें से कोई भी नहीं आया। यह जोगिन्द्र सिंह भी इसी खब्त में था और मेरे पीछे फिरता था। यह सत्संग कराता है। एक स्त्री के अन्तर इसका रूप प्रगट होंने लगा और वह स्त्री इसके दरवाज़े पर आ जाती और कहती कि आपने मुझे यह कहा और वह कहा। इसने मुझे बताया तो मैंने इसको कहा कि अब तेरी आंख खुल गई या नहीं ? सारा संसार इस चक्कर में आया हुआ है। ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बर सिवाय विशेष २ के सभी इसी चक्कर में रहे।

जब तक कोई महासुन्न से आगे नहीं जायेगा वह इस चक्कर से निकल नहीं सकता। महासुन्न क्या है जब मन में रंगरूप भाव विचार और संकल्प का पैदा होना बन्द हो जाये तो उसके बाद जो मन की अवस्था होती है उसका नाम महासुन्न है। साधन से यह अवस्था आ जाती है। मगर साधन के बाद फिर रंग रूप आने आरम्भ हो जाते हैं। इसलिए महासुन्न से गुरु निकालता है। कैसे ? यह ज्ञान देकर कि ये

जितने रूपरंग तेरे अन्तर आते हैं, यह सब माया है। मैं महासुन्न से निकल नहीं सकता था। समाधि के बाद फिर रंगरूप आ जाते थे और मैं उनको सत मानता था। हज़ूर दातादयाल जी महाराज नें फरमाया था कि तुमको सत्गुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब वह हो गये। ऐसी शिक्षा जो मैं देता हूं कोई महात्मा नहीं देता। सब तुमको मन के चक्कर में ही रखते हैं। मैंने अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहा है। कई बार सोचता हूं कि क्या तू सचमुच सत्गुरु है ? मेरा कर्तव्य है जोवों को सतलोक ले जाना। लेकिन जब तक तुम्हारी बुद्धि साफ नहीं होती और तुमको सच्चा ज्ञान नहीं मिलता तब तक तुम पार नहीं जा सकते। मगर तुम लोग इस शिक्षा के अधिकारी नहीं हो, क्योंकि तुम तो संसार चाहते हो। इसके लिए भी मैंने तुम को बता दिया कि एक पर बिश्वास रखो। चाहे राम पर रखो चाहे कृष्ण पर रखो चाहे किसी देवी या देवते पर रखो या किसी गुरु पर रखो मगर एक पर रखो। जिस रूप में तुमने उसे माना हुआ है वह *Universal Mind* उसी रूप में आकर तुम्हारा

काम कर जायेगा। आज का उदाहरण तुम्हारे सामने है। मैं तो गया नहीं। वह मेरे रूप में मालिक को मानता था। इसलिए वह *Universal Mind* मेरा रूप धरकर उसका काम कर गया। यदि संसार से निकलना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द को मानो मगर इसके लिए पहले ज्ञान होना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस सतगुरु की सेवा करो जिसने सतपुरुष को जान लिया है। इससे तुम्हारे मन की मैल धुल जायेगी।

भूपसिह ! तुम यह काम करते हो। मैंने तुम दिल्ली वालों को यह खज़ाना दिया हुआ है। यह मेरे जीवन की कमाई है। तुम्हारे पास काफी सत्संग हैं। जो लोग अधिकारी हैं उनको सुनाया करो। मेरे बचन ही जीवों को तारकर ले जायेंगे, यह नहीं कि मैं ले जाऊंगा।

बाणी गुरु गुरु हैं बाणी बाणी अमृत सारे।

मगर तरेंगे वे जो तरना चाहते हैं तुमलोग तो तरना नहीं चाहते। तुमको तो संसार चाहिए। यदि संसार चाहते हो तो दिया करो। जो दिया हुआ है वही मिलेगा। प्रेम दिया है तो प्रेम मिलेगा। घृणा की है तो घृणा होगी। धन दिया है तो धन मिलेगा। कई

स्त्रियें कहती हैं कि बाबा जी ! पति के साथ बनती नहीं। तो जो दिया हुआ है वही मिलेगा। इसलिए प्रेम दो और प्रेम लो। धन दो और धन लो। मान दो और मान लो। अन्न दो और अन्न लो। प्यासे को पानी पिलाओ। तुमको भी मिलेगा। यह कलियुग है जो दोगे वही मिलेगा। यदि तुम दूसरों से घृणा करते हो और फिर यह आशा करते हो कि संसार तुमसे प्यार करे तो यह असम्भव है। जिस प्रकार तुम दूसरों से हेराफेरी करके अपना स्वार्थ निकाल लेते हो ऐसे ही दूसरे भी तुमसे करेंगे। रात को जब तुम लोगों ने मुझे रोका कि बाबा जी ! जाओ मत और प्रातः सत्संग दो तो मैंने सोचा कि क्या तू अपना कर्तव्य पूरा करता है। मैं सत्संग कराता हूं। सोचता हूं कि फकीर ! तुमने अपने आपको समय का सन्त सतगुरु कहा है और किसी ने आज तक यह बात नहीं कही। तुमने क्यों कही ? मैंने सच्चाई वर्णन की है और सच्चाई का प्रमाण दे दिया है। क्या आज तक किसी ने यह बात कही कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता। न स्वामी जी महाराज ने कहा, न हजूर महाराज ने कहा, न हजूर दाता दयाल जी महाराज

ने कहा, न हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने कहा और न कबीर साहिब ने कहा। लेकिन कहा सबने। मगर कहा इस ढंग से कि जो समझ सके वे समझ गये और जो न समझ सके वे न समझ सके। कहा सबने। बाणियां भरी पड़ी हैं। तुम्हारे अन्तर जितने रूपरंग प्रगट होते हैं। तुम उनको सत मानते हो मगर राधास्वामी दयाल की बाणी उनको असत कहती है! सुनो :—

देखो गगन के बीच, श्याम कंज खिल रहा।
भंवरा गया लुभाय, वहीं चढ़ के मिल रहा॥
धोखे का वह मुकाम, उसे देखता रहा।
बहु सिद्ध नाथ जोगी, उन्हें पेखता रहा॥

यह स्वामी जी की बाणी है। वह कहते हैं कि अन्तर में जो सिद्ध नाथ जोगी प्रगट होते हैं, यह सब धोखा है। मैंने एक दिन सुना कि एक डेरे का कोई आदमी सत्संग करा रहा था और वह कहता था कि आज मेरे अन्तर बड़े २ महात्मा और गुरु महाराज प्रगट हुये और मुझे यह कहा और वह कहा। ऐसी बातें कहकर तुम लोगों को मूर्ख बनाकर लूटा जा रहा है। इस बाणी के अनुसार तो जो कुछ अन्तर में प्रकट होता है यह सब धोखा है। मैं कहता

हूं कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और जो कुछ तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है यह सब तुम्हारे मन का खेल है। मैं संसार में पहला आदमी हूं जिसने इस भद को खोला है। खोला तो स्वामी जी ने भी और कबीर साहिब ने भी मगर इस विधि से खोला कि किसी की समझ में नहीं आया।

काल अपना जाल एक, जुदा ही बिछा रहा।
जो जो गये वहां, उन्हें उलटावता रहा।

यदि अन्त समय पर तुम्हारे सामने कोई रंगरूप आ जायेगा तो तुमको दूसरा चोला अवश्य लेना पड़ेगा। तुम आवागवन से नहीं निकल सकते। यदि आज मुझे राधास्वामी मत की शिक्षा में कोई नुक्स दिखाई देता तो मैं इसके विरूद्ध आवाज़ दे जाता। हजूर महाराज ने अपनी बाणी में साफ लिखा है कि अन्त समय पर फिल्म चलती है। जिस गुरु से नाम लिया हुआ होता है वह गुरु भी सामने आ जाता है और शब्द भी सुना जाता है, फिर कुछ समय तक उस जीव को ऊपर के लोकों में रहना पड़ता है। वहां उसको सतगुरु के दर्शन भी मिलते रहते हैं फिर जब कोई संत सतगुर

इस संसार में आता है तो वह जीव इस ससांर मैं जन्म लेकर उस सतगुरु के सम्पर्क में आता है और बाकी भी कमाई पूरीं करके अपने निज घर वापिस पहुंच जाता है। बाकी की कमाई यह है कि जीव को यह ज्ञान हो जाये कि अन्तर में जो रूपरंग आदि प्रकट होते हैं। यह सब माया है। क्योंकि यह ज्ञान कोई महात्मा नहीं देता। इसलिए मैंने अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहा है। तुम लोग मेरे पास परमार्थिक दृष्टि से नहीं आते। जो लोग परमार्थिक दृष्टि से मेरे पास आयेंगे और मेरी बात को ध्यान से सुनेंगे वे इस चक्कर में रह नहीं सकते। क्योंकि अन्त समय पर जब मेरा यह ज्ञान तुम्हारे सामने आयेगा तो तुम प्रकाश शब्द और अपने रूप में जाने के लिए विवश हो जाओगे। क्योंकि जब तक रूपरंग तुम्हारे सामने हैं चाहे वह किसी का भी रूप क्यों न हो वह तो काल और माया का चक्कर है। जब यह ज्ञान हो जायेगा तो फिर जब तुम्हारा अन्त समय आयेगा तो तुमको गुरु का नाम याद आयेगा। गुरु का नाम क्या है ? राधास्वामी ! राधास्वामी क्या है ? सुरत और शब्द। इस वास्ते तुम अपने घर जाओगें। इसलिए

मेरा सत्संग वह सत्संग है जो "सौ बर्ष की इवादत से अढ़ाई घड़ी का सत्संग उत्तम है।" मगर तुम लोग सब के सब इस सत्संग के अधिकारी नहीं हो। केवल चार पांच आदमी इस तत्संग के अधिकारी हैं यद्यपि मेरा सत्संग टेपरिकार्ड हो रहा है। आनेवाले समझदार लोग और सतपुरुष जब मेरे इन भाषणों को सुनेंगे तो वे सोचेंगे कि कोई सतपुरुष इस संसार में आया था। मैं तुमको नहीं ले जा सकता। मेरी बाणी तुमको ले जायेगी।

नाना कला दिखाय, वही मोहता रहा।
सब की कमाई आप, खड़ा खोसता रहा।

कैसे ? तुमने बड़ा परिश्रम करके अपने अन्तर बाबे फकीर का या किसी और गुरु का या राम या कृष्ण का रूप बनाया। तो रूप से तुम पार नहीं जा सकते क्योंकि यह रूप तो माया है। इसलिए तुम्हारा यह सारा परिश्रम और कमाई जाती रही। पूरा सत्गुरु अपनी बाणी और बचन कहकर जीव की कमाई पूरी करवाता है।

क्या क्या कहूं, अनर्थ बहुत भांति कर रहा।
बिन संत सतगुरु, वह सभी को निगल रहा।

अब तुम बताओ कि यह जितने महात्मा अपने चेलों से Direct या in direct ढंग से अपना प्रोपेगण्डा करवाते हैं कि तुम्हारे अन्त समय पर हम तुमको सतलोक ले जायेंगे क्या ये सत्गुरु हैं ? ये तो सच्चा ज्ञान नहीं देते । सत्गुरु कौन है ?

सति पुरख जिनि जानिया, सतिगुरु तिस का नाउ ।
तिस के संगि सिख उधरै नानक हरि गुन गाउ ।

यह सत्संग मैं अपने ही आपको करा रहा हूं । मैं सत्गुरु हूं मगर बाबे फकीर का नाम सत्गुरु नहीं । सत्गुरु है सच्चा ज्ञान । मेरे शरीर को पूजने से, मुझे दस हज़ार रुपया देने से या मेरा मंदिर या डेरा बना देनें से तुम पार नहीं जा सकते । गुरु की सेवा का कल तुम लोगों को सत्संग कराया था । गुरु की सेवा क्या है ?

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने ।
गुन गुन काढ़ लिवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे आहार ।
कर आहर पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गवाई ।

यह है गुरु की भक्ति । रुपये देना तो संसार का व्यवहार है । जो दोगे वह मिलेगा ।

आगे न कोई जाय, इसी में भुला रहा ।
माया का झूला डाल, मुनन को झूला रहा ।

जितने महात्मा इस समय तुमको अपने पीछे लगा रहें हैं। या अपने डेरों या मंदिरों के पीछे लगा रहे हैं। इन में से कोई भी सत्गुरु नहीं। सत्गुरु वह है जो तुमको चौथे पर में ले जाये या कम से कम तुमको यह शिक्षा तो बतादे। जाओ या न जाओ, ये तुम्हारे अपने कर्म हैं।

द्वारे के पार काहु को, जाने न दे रहा।
फिर भेद वहां के पार का, सब ही ढका रहा।
क्या शेष क्या महेश, सभी हार कर रहा।
बिन संत उसके पार, कोई भी न जा रहा।
सो भेद राधास्वामी, सभी को सुना रहा।
जिन पर है मेहर उनकी, वह परतीत ला रहा।

वही भेद यह फकीर चन्द सबको सुना रहा हैं। यदि मैं अपने आपको राधास्वामी कहता हूं तो कौन सा जुल्म करता हूं। जो भेद राधास्वामी दयाल ने बताया वही मैं बता रहा हूं। गुरु का काम है भेद देना।

गुरु ने अब दिन्हा भेद अगम का, सुरत चली तज देश भरम का।
बल पाया अब विरह मर्म का, भटकन छूटा देरो हरम का।
वर्षन लागा मेघ कर्म का, संशे भागा जनम मरन का।

मैं सोचता हूं कि क्या तुम यहां पैसे इकट्ठे करने के लिए आये हो ? नहीं ! मैं आया हूं सच्चा ज्ञान देने के लिए मगर किनको ? यह मुझे पता नहीं। मेरे सिर पर गुरु ऋण था उसको उतार चला।

'सब को राधास्वामी'

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ८ फरवरी १९६९ स्थान इन्दौर (मध्म प्रदेश)

राधास्वामी । मैं लगभग हर साल यहां आता हूं । पता नहीं क्यों मगर आ जाता हूं । अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तुम क्यों आते हो और यहां आने का क्या अभिप्राय है ? सुनो दोस्तों ! मैं इस संसार में आया ही इसलिए हूं कि निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करूं । मेरे नाम मेरे सत्गुरु हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की आज्ञा है ।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा ।
दुखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा ।
तीन ताप से जीब दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ।

तू धन्य है तू धन्य है, तेरी उतम देही।
जग कल्यान जगत में आया परम दयाल सनेही।

मैं संसार के अज्ञानियों, मूर्खों और भ्रम में आये हुये जीवों को कुछ कहना चाहता हूं। मगर मैं जो कुछ कहना चाहता हूं तुम लोग इसको समझते नहीं हो। जो कुछ कबीर साहिब कह गये मैं भो वही कहता हूं। कबीर साहिब एक शब्द में लिखते हैं :—

मेरा तेरा मनुवा कैसे एक होइ रे।
मैं कहता हूं आंखन देखी, तू कहता कागज़ की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राखो उरझाइ रे।
मैं कहता तू जागत रहिऐ, तू रहता सोई रे।
मैं कहता निर मोहि रहिए, तू जाता है मोहि रे।

कबीर साहिब कहते हैं कि हमारा तुम्हारा मेल नहीं हो सकता। क्यों! क्योंकि मैं आंखो देखी कहता हूं और तुम किताबों के हवाले देते हो।

मैं चाहता हूं कि तुम उलझन से निकल जाओ मगर तुम तो मुझे भी उरझाते हो। मैं अपने प्रालब्द कर्म अनुसार या मौज मालिक से सन्तमत में आया। क्या मिला मुझे ? आज मैं अपने आपको भाग्यवान समझता हूं कि मुझे सचाई और असलियत का पता लग गया। यह सब संसार अपने मन के चक्कर में

आया हुआ है। आज की घटना सुनो। आज मुझे एक सत्गुरु के दर्शन हुये और वह सत्गुरु है सेठ अमीं चन्द। उन्होंने मुझे बताया कि जब आज प्रातः यह अभ्यास में बैठे थे तो मेरा रूप इनके अन्तर प्रकट हुआ और इनसे कहा कि मैं दो दिन से यहां आया हुआ हूं किन्तु तुम नहीं आये। तुम कार लेकर आ जाओ। अब ऐ संसार वालो ! तुमको सब धर्मों और पंथों ने उरझाया हुआ है और अपने जाल में फंसाया हुआ है। इसलिए कबीर साहिब ने इस शब्द में कहा है कि मैं तुमको सुरझाने के लिए कहता हूं और संसार तुमको उल्झाता है। मैं शपतपूर्वक कहता हूं कि मैंने सेठ अमीं चन्द को नहीं कहा और न ही मुझे इसका कोई विचार था कि यहां का रहने वाला कोई सेठ अमीं चन्द है। आज प्रातः जब यह मुझे मिला तो उस समय दिल में विचार आया कि यह आदमी मैंने पहले कभी देखा हुआ है।

मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु ! संत कबीर का अवतार हूं। जो कुछ कबीर साहिब ने कहा वही मैं कहता हूं। जो कुछ राधास्वामी दयाल कह गये वही मैं कहता हूं। क्या कहता हूं ? कि ऐ मानव ! तू

अपनें मन के चक्कर में आया हुआ है ? मैं तुम लोगों को सत्संग दिये जा रहा हूं। बात को समझो। अब यदि मैं इस आदमी को अपना सत्गुरु न मानूं तो किसको मानूं ? इससे मुझे ज्ञान मिला ? सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का और सच्चा ज्ञान देने वाले का, सुरझावन वाले का और बंधन को तोड़ने वाले का। मुझे यह गुरु पदवी इसलिए नहीं मिली थी कि मैं तुम लोगों को उरझाऊं बल्कि इसलिए मिली थी कि मैं अपनें आपको और तुम लोगों को सुरझाऊं। कभी मेरा भी हजूर दाता दयाल जी महाराज पर ऐसा ही विश्वास था। मैं उनके शरीर से चिमटा हुआ था। उस समय उन्होंने फरमाया था कि फकीर ! तुमको काम देता हूं। नामदान दिया करो और सत्संग कराया करो। इससे यह मत समझना कि तुम किसी का बेड़ा पार कर सकोगे मगर तुमको राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में हो जायेंगे। क्योंकि तुम सच्चे आदमी हो इसलिए हो सकता है कि तुम भी इस बन्धन से निकल जाओ और दूसरों को भी निकाल दो।

अब मैं तो निकल गया मगर लोग निकलना नहीं चाहते यह सारा खेल तुम्हारे ही मन का है। यह मन ही तुमको फंसाने वाला है और मन ही तुम्हारा सहायक हैं। राधास्वामी मत की बड़ी पोथी का एक शब्द सुनो :–

मन रे मान बचन इक मेरा।
मैं तेरी दासी जनम जनम की, तू हुआ स्वामी मेरा।
तीन लोक का नाथ कहावे, तीन देव तेरा चेरा।
ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जति सति सब घेरा।

जति सती को कैसे घेरा ? ये जितने चमत्कार आदमी से होते हैं या जितनी रिद्धि सिद्धि होती है। यह कौन करता है ? तुम्हारा मन करता है। यह अनुभव मुझे कैसे हुआ ? एक तो आपको आज की ही इस सेठ अमीं चन्द की घटना सुनाई। और सुनो। यह भूप सिंह आपके सामने बैठा हुआ है। 9-10 साल हुये यह अपने किसी बुरे कर्म के कारण आत्म-हत्या करना चाहता था। कुतबमीनार से कूदकर मरना चाहता था या नदी में डूबकर मरना चाहता था। क्योंकि यह बिजली विभाग में काम करता था इसलिए एक दिन इसने बिजली के तार को छु कर

मरना चाहा, उस समय इसके अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ और इससे कहा कि "जाग जाग जाग भूपसिंह ! तेरा समय आ गया है और फिर कहा कि ।

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाये।
जो कोई साधे एक को, आप एक को जाये।

भूपसिंह ने बताया कि फिर आप आकाश की ओर उड़ गये और मैंने आपको तारे की शकल में देखा। मैं शपतपूर्वक कहता हूं कि मैं नहीं गया और न ही मुझे कोई पता है। देवास के एक लड़के ने मुझे बताया कि वह साइन्स का B Sc. का पर्चा देने गया। पर्चा बहुत कठिन था मैंने आपको याद किया। आप आ गये और मेरे डैस्क के नीचे बैठकर मुझे सारा पर्चा हल करवा दिया और १०० अकों में से मुझे ९८ अंक आये। ऐ संसार के भोले भाले प्रणियों ! मुझे कोई पता नहीं और न ही मैं गया। कहांB. Sc. की शिक्षा और कहां मैं लोयर मिडल पास और फिर साइन्स के बारे मैं जानता ही नहीं। उसका पर्चा किसने हल कराया ? उसके मन ने। एक लड़के की टांग पर ५-६ मन का पत्थर पड़ गया। टांग नीचे दब गई। उस लड़के ने बताया कि बाबा जी ! मैंने आपको

याद किया। आप आ गये और पत्थर को उठाकर दूर फैंक दिया।

मैं एक बार सरसों हेड़ी गया तो एक स्त्री ने अपना छोटा सा बच्चा मेरी गोद में डाल दिया। मैंने पूछा कि क्या बात है तो उस स्त्री ने कहा कि बाबा जी ! यह आपकी दात है। उसने बताया कि अठारह साल से मेरे कोई बच्चा नहीं हुआ। एक दिन रात को मैंने अपने ससुर और सास को यह कहते हुये सुना कि अपने लड़के का दूसरा विवाह कर दें। मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं अपने कमरे में चली गई। कमरे में अंधेरा था। आपके फोटो के सामने खड़ी होकर बहुत रोई। कमरे में एक दम रौशनी हो गई। आप प्रकट हुये आपके हाथ में रौशनी का एक बच्चा था। आपने वह मुझे दे दिया और फरमाया कि घबराओ नहीं। अब आपकी दया से मेरे यह लड़का पैदा हुआ है।

ऐ संसार वालो ! तुमनें कभी किसी सच्चे आदमी की कदर नहीं की। मरनें के बाद उसको समाधियां बनाते हो और उसके नाम के झंडे खड़े करते हो।

मैं सच कहता हूं कि मैं कहीं नहीं गया। फिर कौन गया ? वह तुम्हारा अपना ही मन है। तुम्हारे मन में बहुत शक्ति है। अपने मन के विश्वास के कारण तुम जो चाहो बन सकते हो, जो चाहो प्राप्त कर सकते हो। तुम अपने मन के कारण अच्छे भी बन सकते हो और बुरे भी। अब तुम सोचो कि क्या किसी महापुरुष ने आजतक यह सचाई बताई। सब ने तुमको उलझाया और अपने जाल में, अपने डेरे में, अपने धर्म में और अपने पंथ में फंसाया और तुमको मूर्ख बनाकर लूटा। तुमको जो कुछ मिला वह तुम्हारे ही विश्वास का फल मिला। मैं हूं सतपुरुष और निर्भय पुरुष। इसलिए सचाई वर्णन करता हूं।

सांची बात कबीरा कहैं सबके मन से उतरें रहें।

तुम निबल अबल और अज्ञानी हो तुमको सचाई का पता नहीं। मैं पिछले साल यहां कुम्भ पर आया। यहां आठ दिन मेरा कैम्प रहा। मैंने जय सनातन धर्म की अवाज़ लगाई। रधास्वामी मत के आधार पर सचाई वर्णन की। सनातन धर्म में और राधास्वामी मत में कोई अन्तर नहीं। सुरत सम्वाद में सुरत मन से कहती है कि ऐ मन ! तुममें सब

शक्तियें भरी पड़ी हैं तू मेरा बचन मान। इसलिए तो मैं कहता हूं कि यदि तुम संसार का सुख चाहते हो तो अपने मन को वश करो और जो कुछ तुम बनना चाहते हो उसकी आस रखो। जैसी आसा बैसी बासा के सिद्धान्त अनुसार तुम सफल हो जाओगे।

मैं राधास्वामी धाम का रहने वाला हूं अनामी धाम का वासी हूं। मगर मैं पहले आगरा गया, फिर व्यास गया और फिर राधास्वामी धाम में पहुंचा। तुम आगरा को नगर समझते हो। आगरा है हमारा घर अर्थात पहले मैं शरीर में आया फिर व्यास गया अर्थात बेआस हुआ, आस को छोड़ा। यदि मैं आस न छोड़ता अर्थात व्यास (बे आस) में न जाता तो मैं इस अवस्था में नहीं आ सकता था। अगर मुझे यह आस होती कि मेरा नाम रौशन हो जाये। तुम लोग व्यास के सत्संगी हो। मैं यदि परदा रखता तो तुम लोगों को वश कर लेता और जितनी इच्छा धन मान प्रतिष्ठा तुम लोगों से लेता मगर मुझे यह इच्छा नहीं है। इसलिए मैं पहले

आगारा में आया। फिर ब्यास गया। अब मुझे किसी प्रकार की सांसारिक चाह नहीं रही।

चाह गई चिन्ता सब भागी मनवा बे परवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए वह शाहों का शाह।

जिन लोगों के अन्तर और विशेषकर इन सेठ साहिबान के अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ और इनके काम कर गया। यदि मैं इनको सचाई नहीं बताता तो ये तो समझेंगे कि बाबा बड़ा करनी वाला है। यह कर देता है वह कर देता है और मुझको रुपया पैसा देंगे, मेरा मान करेंगे। यदि मैं उस पैसे को खा जाऊंगा तो जाऊंगा कहाँ? क्योंकि मैंने कुछ किया नहीं है, इसलिए मैं उस पैसे का अधिकारी नहीं। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु और वह शिक्षा देता हूं जो इस समय चाहिए। सच्चा ज्ञान दिये जाता हूं कि ऐ मानव! तू भूल और भ्रम में है। तुमको इन धर्मों पंथों और गुरुओं ने सचाई नहीं बताई और तुमको अज्ञान में रखा हुआ है। क्या कोई गृहस्थी इतनी बड़ी शपथ लेकर कहता है कि मैं कहीं नहीं जाता? लेकिन मैं कहता हूं कि मैं कहीं नहीं जाता। मेरा रूप जगह जगह प्रगट होता है, लोगों को

दवाईयें बता जाता है, पुत्र दे जाता है। लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। कानपुर में मुझे एक अंधी स्त्री ने आकर बताया कि मेरे लड़के को T. B. हो गई थी। मैं बहुत रोई। आपको याद किया। आप आये और तीन दवाईयें बताईं। उनके प्रयोग से मेरा लड़का स्वस्थ हो गया। अब मैं तो गया नहीं और न ही मुझे कोई पता है। यही बाणी बतलाती है।

तीन लोक का नाथ कहावे, तीन देव तेरा चेरा।
ऋषि मुनि सब पर हुकम चलावे, जति सति सब घेरा।

क्यों ? क्योंकि रिद्धी सिद्धी, योग, जप तप इन सब का सम्बन्ध मन से है। क्योंकि जैसी किसीकी आसा होती है वैसी उसकी बासा होती है। इसलिए जो कुछ तुमको इस संसार में मिलता है उसका सम्बन्ध तुम्हारे मन से है। तुम्हारा ही विश्वास काम करता है। सेठ मोती लाल के घर ५०-५५ साल की आयु में मेरे प्रसाद से लड़का हुआ। मेरी लड़की के विवाह को पंदरह साल हो गये। मैंने कई बार उसको प्रसाद दिया लेकिन उसके कोई बच्चा नहीं हुआ। तो फिर आप बताओ कि क्या मेरे प्रसाद से मोतीलाल के या और कई लोगों के घर बच्चे हुये ? नहीं। सब तुम्हारे

विश्वास का खेल है। जैसा विश्वास मुझपर तुमलोग कर सकते हो वैसा मेरी लड़की नहीं कर सकती। सकन्दरावाद के बुरगो महा देव बारहः साल से बीमार थे। मुझको उसके पास ले गये। उन्होंने मुझसे कहा कि महाराज साधू महात्मा दुख दूर कर सकते हैं ? मैंने कहा कि क्या आपको मुझ पर विश्वास है ? हां है। क्या कुछ दान करोगे ? उन्होंने सोचा कि शायद लाख दो लाख रुपया मांगेंगे। उन्होंने अपने लड़कों की और देखा। लड़कों ने संकेत को समझा और कहने लगे कि महाराज, जो आप कहोगे हम दान देंगे। मैंने कहा कि पन्डित को बलाओं, जो विधिपूर्वक दान करायेगा। पण्डित आ गया। मैंनें कहा पण्डित जी ! सेठ साहिब दान करेंगे आप विधिपूर्वक कार्य कर्म करायें। जब संकल्प का समय आया तो मैंने कहा कि सेठ जी ! अपने जन्म २ के पापों का फल मुझे दे दो और यह विश्वास कर लो कि अब तुम्हारे जिम्मे काई पाप नहीं है। यदि तुम्हारा कोई शुभ कर्म होगा तो तुम बच जाओगे। यह कहकर मैंनें संकल्प का पानी लिया और पी गया। नन्दु भाई जी महाराज और माम चन्द मेरे

साथ थे। वे डर गये। लेकिन मैंने उनसे कहा कि डरो मत मुझे कुछ नहीं होगा। सेठ साहिब थोड़े दिनों में स्वस्थ हो गये। क्या मैंने स्वस्थ किया ? नहीं। उनके विश्वास ने स्वस्थ किया। तुम लोग आये हो, तुम यह विश्वास करो कि तुम्हारा और जन्म नहीं होगा।

गुरु तारेंगे हम जानि तू सूरत काहे बोरानी।

मोतीलाल ! यदि तुम और किसी गुरु के काबू में आ जाते तो वह तुमको लूट के खा जाता। मत किसी के काबू में आओ। अपने मन को आशावादी रखो और विश्वास रखो। कभी निराश नहीं होना चाहिए।

आस कर गुरु की दया की हो निराश न तू कभी।
जो निरास हुआ समझले गुरु का दास न तू कभी।

इस संसार में सुखी रहने का क्या उपाय है ? सदा यह विश्वास रखो कि मालिक जो करता है अच्छा करता है 'जो करी है सो भली।' मगर यदि संसार से पार जाना हो तो उसके लिए और विधि है। मन चौदह लोक का वासी है। आदमी के मस्तिष्क में सब कुछ भरा हुआ है। ऐ मानव ! तू पूर्ण है।

जैसा तेरा ख्याल है वैसा तेरा हाल है। सब तुम्हारे ही मन का खेल है।

तेरे बस सुर नर और जोगी कोई तेरा हुकम न फेरा।

शरीर और वस्तु है, मन और चीज़ है और सुरत और चीज़ है। हमारी सुरत शरीर मन और प्रकाश में फंसी हुई है। हमारा रूप और है।

जस चाहे तिस जगत फंसाये और चाहे तिस करे निबेड़ा।

तुम्हारा मन ही तुमको फंसाता है और तुम्हारा मन ही तुमको आज़ाद करता है। हम मन के कारण ही बन्धे हुये हैं और मन के कारण ही स्वतन्त्र होते हैं। शास्त्र कहते हैं कि माया ही फंसाती है और माया ही स्वतन्त्र करती है। माया क्या है ? मन के विचार ही माया है।

ऐसी महिमा सुनी तुम्हारी ताते तुम पर करूं निहोरा।
इस तन नगरी तृच्छ देश में क्यों कैदी हुये पड़े अंधेरा।
सतगुरु मोसे कहा वचन इक मन संग ले चलो सवेरा।

वह फरमाते हैं कि ऐ सुरत ! यदि तू निकलना चाहती है तो मन को साथ ले। मैं यही तो कह रहा हूं कि तुम लोग भूले हुये हो। तुम समझते हो कि बाबा फकीर पुत्र देता है, तुम्हारी बीमारी दूर

कर देता है, नदी में डूबते हुये बचा देता है आदि २ यह सब तुम्हारे मन का खेल है। मैंने भूपसिंह से नहीं कहा कि तू जाग। इसके मन ने कहा। क्योंकि इसके दिल में दुख से बचने की इच्छा थी और इसके दिल में सचाई थो। इसलिए यह मेरे पास आ गया। जहां से किसी का काम बनना होता है प्रकृति उसको वहां पहुंचा देती है। ऐसे ही मैं भी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में गया था।

पिछले साल मैं दोसहरा पर दिल्ली गया तो वहां एक बजाज साहिब जो कि काफी अमीर आदमी है, मुझे अपनी कार में लिये फिरते रहे। दो दिन के बाद मैंने उनसे कहा कि आप किस लिए मुझे अपनो कार में लिए फिरते हो तो उन्होंने कहा कि महाराज ! मेरा एक प्रश्न था जो काफी समय से हल नहीं हो रहा था। मैं हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज, बाबा जगतसिंह जी, बाबा चरणसिंह जी ओर सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के सत्सगों में भी जाता रहा लेकिन मेरी वह गुत्थी हल नहीं होती थी। आपके सत्संग से सुलझ गई। मैंने पूछा कि वह क्या समस्या थी तो उन्होंने बताया कि मेरो

आयु २१ साल की थी। मैं पढ़ा करता था और अपने बड़े भाई की कोठी में रहता था। उनके दो बच्चे भी थे। अकाल पड़ा हुआ था। गरीब लोगों को अन्न की कठिनाई हो रही थी। एक दिन भाई के बच्चों ने मुझे कहा कि हमको सिनेमा दिखाके लाओ। मैंने उनसे कहा कि यदि हम यह पैसा बचाकर किसी निर्धन को दे दें तो बहुत अच्छा होगा। वे मान गये और मैंने पांच रुपये बच्चों के सामने दान करने के लिए जुदा रख दिये। दूसरे दिन एक बूढ़ा मुसलमान जो हमारी कोठी के सामने कुछ दूर एक मसज़िद में नमाज़ पढ़ाया करता था, आया और कहने लगा कि मालिक मकान कौन है और वह कहां है। मेंने कहा की वह मेरा भाई है और घर में नहीं है। उसने कहा कि कल तुम लोगों ने जो पांच रुपये दान करने के लिए रखे हैं वह दे दो। उसकी बात सुनकर मैं बहुत चकित हुआ और उससे पूछा कि तुमको कैसे पता लगा। उसने कहा कि मैं उस सामने वाली मसज़िद में लोगों को नमाज़ पढ़ाता हूं। लोग आते हैं उनके पास देने को कुछ है नहीं और मैं तीन दिन से भूखा हूं। आज प्रातः ईश्वर से

प्रार्थना की कि मैं भूखा ही मर जाऊंगा ? मेरे अन्तर एक फरिशता प्रकट हुआ और कहने लगा कि सामने वाले मकान में चले जाओ। उन्होंनें पाँच रुपये दान के लिए रखे हुये हैं वे ले लो। अब यदि तुमनें रखे हुये हैं तो मुझे दे दो अन्यथा तुम्हारो मौज। मैंनें वे पांच रुपये उसको दे दिये। मुझे आज तक इस बात की समझ नहीं आती थी कि उसको कैसे पता लगा कि हमने पांच रुपये रखे हुये हैं। यह समस्या थी जो आपके सत्संग से सुलझ गई।

अब आप सुनो कि उसको कैसे पता लगा ? हम कुछ सोचते है, विचार करते हैं या चाह करते हैं वह सब कुछ ब्रह्माण्ड में मौजूद रहता है। विज्ञान सिद्ध करता है कि तत्व नाश नहीं होता लेकिन अपनी शकल बदल लेता है। न्यूटन की थ्यूरी के अनुसार हमारे शरीर के हर भाग की गति ऊपर अपने केन्द्र तक जाती है और वहां से शक्ति ले कर फिर उसी जगह वापिस आ जाती है जहां से कि वह चली थी। शरीर की गति सूर्य तक जाती है। मन की गति स्वः, महः जनः और तपः तक जाती है फिर उसी जगह वापिस आ जाती है। हर एक आदमी के अन्तर से उसकी

Radiation निकलती है। आदमी का शरीर Radio Station रेडियो स्टेशन है। क्योंकि मैं सब का भला चाहता हूं और दूसरे महात्मा भी सबका भला चाहते हैं और हमारे ये विचार भी ब्रह्मण्ड में रहते हैं तो हमारे वे विचार, प्रबल इच्छा वाले लोगों को उस जगह ले जाते हैं जहां से उनका काम बनना होता है। यह है भेद। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि मन बचन और कर्म से शुद्ध रहो ताकि तुम्हारे अच्छे विचारों का प्रभाव तुम पर भी अच्छा पड़े और दूसरों पर भी अच्छा पड़े। यदि तुम्हारे गन्दे विचार हैं तुम बेशक किसी को बताओ मत, मगर जो तुम्हारी संगत में आयेंगे उनपर तुम्हारे गन्दे विचारों का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। इसलिए अच्छे लोगों की संगत करो। यदि मैं परदा रखता और यह कहता हूं कि हां! मैं लोगों के अन्तर जाता हूं तो मेरे इस पाखण्ड के कारण मेरी Radiation दूसरों को स्वतन्त्र कैसे करेगी? तुम ज्ञान के कितने भी भाषण क्यों न सुनो तुमको ज्ञान नहीं होगा यदि होगा तो वाचक ज्ञानी बन जाओगे, क्रियत्मिक रूप से नहीं। देखो! यदि एक वैश्या सीता का पार्ट करती है वो उससे संसार

प्रभावित नहीं होगा। ऐसे हो जो महात्मा धोखा देते हैं, सचाई नहीं बताते और अपने झूठे मान प्रतिष्ठा और धन के लिए प्रौपेगन्डा करवाते हैं उनको संगत से तुम निर्बन्ध नहीं हो सकते चाहे कितने ही भाषण सुनते रहो।

मन बोला सुरत से फिर ऐसे, विषय स्वाद मोसे जात न छोड़ा।
कैसे करूं बचन कस मानूं, मैं इन्द्री बस हुआ नथोड़ा।
बल पौरुष मैं सब ही हारा, अब इन से मेरा चले न जोरा।
मैं चाहूं छोड़ूं भोगन को, देख भोग वस चले न मेरा।
आगे पीछे बहु पछताऊं समय पड़े पर होवत चोरा।
कैसे चढ़ूं गगन को प्यारी, मैं चंचल ज्यों दौड़त घोड़ा।
ता ते तो से कहूं जतन मैं, चल सतगुरु पै करो निहोरा।
सरन पड़े अब मिल कर हम तुम, कर सतसंग होय कुछ पोढ़ा।

मन कहता है कि सतगुरु के पास चलकर फरयाद करो। सत्संग करने से हममें शक्ति आ जायेगी।

दया करें सतगुरु जब अपनी, पल पल राखें मोको मोड़ा।
मैं अपने बल चढ़ूं न कबही जब लग मिले न गुरु बंदी छोड़ा।

जबतक कोई बंदीछोड़ गुरु नहीं मिलता तब तक सुरत नहीं चढ़ सकती और न ही सतपद जा

सकती है। तुम उनको गुरु बंदीछोड़ मानते हो जो यह कहते हैं कि वे लोगों के अन्तर प्रकट होते हैं। वे बंदीछोड़ गुरु नहीं हैं। वे तो तुमको बन्धन में डालते हैं। बंदीछोड़ गुरु वह है जो सत पद में रहता है, रूप रंग रेखा से जुदा रहता है। ऐसे पुरुष की Radiation दूसरों की सहायता करती है। जो जैसा होता है वैसी ही उसकी Radiation होती है। जो उसका ध्यान करेगा वैसाही उसपर प्रभाव पड़ेगा। यदि गुरु का ध्यान करने से शान्ति नहीं मिलती तो गुरु अधूरा है। वह गुरु स्वयं शान्त नहीं है। इसका प्रमाण देता हूं। १५ दिसम्बर १९६३ को मेरी स्त्री प्रातः तीन चार बजे के बीच स्वर्गवास हो गई। भण्डारी का भतीजा और उसकी स्त्री बसरे बगदाद में थे। उन्होंने एक मकान किराये पर लिया। जिसके बारे में लोगों का विचार था कि इस मकान में भूत रहते हैं। उन्होंने इस विचार से वह मकान लिया कि हम राधास्वामिए हैं, भूतों को मानते नहीं और उस मकान का किराया भी कम था। लेकिन फिर भी उस स्त्री के मन में भूतों का डर आ जाता था। वह १५ दिसम्बर प्रातः अभ्यास करने

लगी । मेरा ध्यान किया । मेरा रूप प्रकट हुआ और उससे कहा कि आज मेरी स्त्री मर गई है। उस स्त्री ने अपने पति को बताया । उसने अपने बाप को लिखा । आखिर उनको मेरी स्त्री के मरने की पुष्टि हो गई । अब देखो कहां होशियारपुर और कहां बसरा बगदाद ? क्योंकि उसने मेरा ध्यान किया और उसकी Radiation मुझ तक आई और मेरी Radiation उस तक गई । क्योंकि मेरे दिल में तो यह विचार था कि मेरी स्त्री मर गई है तो जो कुछ मेरे अन्तर था वही उस तक जाना था ।

सूरतसिंह नामी एक फोरमैन था । बहुत भक्त था और मेरा प्रेमी था, मेरे दिल में यह इच्छा थी कि कहीं से रुपया आये तो धाम पर भेजदूं । सूरतसिंह सच्चा आदमी था । मेरा ध्यान किया । मेरा रूप प्रकट हुआ और कहा कि धाम पर ५००/- रुपये भेज दो । उसने ५००/- रुपये भेज दिये और मुझे लिख दिया कि मैंने रुपये भेज दिये हैं । लेकिन मैंने उसको यह नहीं लिखा कि मैंनें तुमसे रुपये भेजने के लिए नहीं कहा और न मैं तेरे अन्तर गया । यह मैंने जीवन में पाप किया है । गुरु की ज़ात सदा

निस्वार्थ होनी चाहिए। यदि मैं किसी को अपने स्वार्थ के लिए सत्संग कराता हूं, और फिर परदा भी रखता हूं तो मैं गुरु नहीं, मैं ठग हूं, राधास्वामी मत में बार बार कहा गया है कि पूरे गुरु की तलाश करो। मगर पूरे गुरु को तलाश करने के लिए पूरे शिष्य की आवश्यकता है। पूरा शिष्य वह है जिस को परमार्थ की आवश्यकता है। मगर तुम लोग तो इसलिए नहीं आते। इसलिए ऐसे आदमियों के लिए राधास्वामी मत की शिक्षा नहीं है। तुम लोग किसी एक जगह विश्वास रखो। तुम्हारे सारे काम होते रहेंगे। जो आदमी आज एक को मानता है, कल दूसरे को मानता है, उसके काम नहीं होंगे। इसलिए एक को मानो और यदि आवागवन से बचना चाहते हो तो पूरे गुरु की तलाश करो। समझते हो सेठ मोतीलाल ! रात को तुमने कहा था कि मैं बैसाखी पर कुछ सेवा करना चाहता हूं। मैंने सोचा की यदि मैं सच्ची बात नहीं बताता तो मैं तो पाप का भागी बनूंगा। मैं किसी को धोखे में नहीं रखना चाहता।

मेरा तेरा मनुवा कैसे इक होई रे।

आप लोग मेरे सत्संग के अधिकारी नहीं हो। कहां मैं बोलने वाला और कहां आप बैठे हुये हैं।

मैं अनामी धाम का वासी और तुम माया देश के कीड़े। वहां तक पहूंचने वाले तो कोई दो चार ही होंगे। तुम लोग सत्संग कराने के लिए मुझे विवश करते हो।

हम बासी उस देश के जहां बारह मास विलास।

तुम मेरी बात को समझ नहीं सकते। यह पिछले जन्म का मेरा कर्म है। मैंने सन्तमत की शिक्षा को साफ कर दिया है और सचाई वर्णन कर दी है ताकि तुम लोग लूट से बच जाओ। आज तुम्हारे अन्तर बाबे फकीर का रूप प्रकट हुआ और तुमको पुत्र दे गया। किसी के साथ कोई घटना हुई और किसी के साथ कोई घटना हुई और किसी के साथ कोई खेल हो गया और तुम लोग लुट गये। सेठ मोतीलाल ! तुमने मेरी सेवा की है। जो तुम्हारी इच्छा हो बैसाखी पर सेवा करो। मैंने अपनी चादर को साफ रखा है। तुम लोग गृहस्थी हो। संसार में फंसे हुये हो। तुम लोग वहां नहीं पहुंच सकते।

नानक कोटिन में कोऊ नारायण जिन चेत।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज एक शब्द में लिखते हैं।

मैं तो जंगल में पड़ा हूं, और तुम बस्ती में हो।
ऊंचे चढ़ आया बहुत मैं, और तुम पस्ती में हो।

जंगल क्या है ? जब अन्तर में सुरत अकेली हो जाती है तो वह जंगल में है और जब वह मन के विचारों में फंस जाती है तो वह बस्ती में है।

प्यार करना जिन्दगी है जिन्दगी औरों को दो।
तब कहूंगा सच्चे दिल से तबकाय हस्ती में हो

संसार में सुखी रहने के लिए प्यार से रहो, प्रेम से रहो, प्रेम से खाओ, प्रेम से पियो और द्वेष घृणा को दिल से निकालो। जहां तुम्हारे मन में प्रेम आया तुम्हारे सारे काम होते जायेंगे। प्रेम मार्ग में तुम तो बाबे फकीर से या किसी और गुरु से प्रेम करते हो। राधास्वामी मत में कहा गया है कि गुरु प्रेम का अथाह समुद्र है। कहीं दरिया रूप है, कहीं लहर रूप है और कहीं बूंद रूप है सबसे पहले अपने घरवालों से प्रेम करो। यह बूंद रूप प्रेम है। घरवालों से तो तुम घृणा करते हो और अपने आपको सत्संगी कहलाते हो। तुम कहां के सत्संगी हो ? और तुम में प्रेम कहां है ? यह विचार करना कि हम सब मानव हैं चाहे किसी भी धर्म के हैं।

यह दरया रूप प्रेम है। सारा संसार देवी देवता चान्द सूर्य सब में मालिक का रूप देखना, यह प्रेम का अथाह समुद्र है। यह गुरु का अथाह प्रेम है। One in all & all in one सबको अपने आप में देखना और अपने आपको सब में देखना यह प्रेम का अथाह समुद्र है।

नानक तेरे भाने सरबत का भला।

लेकिन तुम लोग तो अपने भाईयों से, अपने सम्बन्धियों से शत्रुता करते हो, मुकदमेबाजियां करते हो और फिर यह समझते हो कि तुम सन्तमत को मानने वाले हो। अपने जीवन को बनाओ। संसार का कोई ठेकेदार नहीं। संसार में किसी को कुछ मिला या न मिला, लेकिन वे लोगों को खेंचकर बाबे फकीर के पास ले आते हैं। मैं राधास्वामी मत में आया। तर गया। जिस ज्ञान से मैं तरा वह आप लोगों को बता रहा हूं। जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है, वे मेरे सच्चे सतगुरु हैं। इन लोगों से मुझे सचाई की समझ आ गई, इस वास्ते मैं इन लोगों का मान करता हूं।

शिष्य निवे गुरु को, यह जाने सब कोय ।
गुरु निवे शिष्य को, कोई विरला ही होय ।

मैं वह गुरु हूं जो अपने चेलों के आगे सिर निवाता हूं ।

गुरु बतावे साध को, साध कहे गुरु पूज ।
अरस परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ ।

मैं हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के दरबार में गया था । मगर इस अबूझ की समझ नहीं आती थी । हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने सत्संगियों की सेवा की आज्ञा दी थी । इसलिए अमीचन्द ! तुम्हारे जैसों के कारण मुझे यह ज्ञान हुआ । इसके बदले मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि तुम्हारा भला हो और तुम्हारा कल्याण हो । इसके सिवा मेरे पास और कुछ नहीं है । सम्भव है किसी और साधु के पास कुछ हो । मैं सच्चे दिल से तुम्हारी सेवा करना चाहता हूं। मेरे पास शुभ भावनाओं के सिवा और कुछ नहीं । मैं किसी की आंखों में मिट्टी डालना नहीं चाहता । यह लीला देवी अशान्त थी । इसकी लड़की बीमार थी । दिल में दया आई । सोचा कि इसको सुख मिल जाये । प्रालब्द कर्म का खेल है । संसार

में गुरुमत की ग़लत समझ फैली हुई है । मेरे जिम्मे हजूर दातादयाल जी महाराज ने कर्तव्य लगाया हुआ है । मैं करना नहीं चाहता था । इसलिए हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के पास गया । उन्होंने मुझे आज्ञा दी कि निर्भय होके काम करो । मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा । यह उनका मुझे वरदान है । मैंने निर्भय होके सचाई वर्णन की है । मेरी नीयत साफ है । हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज फरमाया करते थे कि 'अन्दर बड़ो ते परदा खोलो ।' वह परदा क्या है ? हमारे अन्तर जो कुछ प्रकट होता है, रंग रूप, भाव विचार और शकलें, यह सब परदा है । जब तक यह परदा नहीं खुलता अर्थात यह समझ नहीं आती कि यह सब माया है, है नहीं मगर भासती है, तब तक तुम आगे नहीं जा सकते तुम लोग सत्संग में आये हो । तुमको लूट से बचाना चाहता हूं । तुम्हारे अन्तर जो रंग रूप प्रकट होते हैं । यह सब मन का खेल है । तुम लोग यह समझते हो कि बाबा फकीर आया, राम आया कृष्ण आया या कोई और गुरु आया । तुमने किसी का मंदिर बना दिया । किसी का डेरा बना दिया । तुम लुट

गये। मैंने तुमको सचाई बर्णन कर दी है। अब जो तुम्हारी इच्छा हो सेवा करो। मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं मैं अपनी चादर को साफ लिए जा रहा हूं, मैली नहीं की :—

झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहे कै ताना काहे कै भरनी, कौने तार से बीनी चदरिया।
इंगला पिंगला ताना भरनी, सुषमन तार से बीनी चदरिया।

इंगला अच्छे विचार, पिंगला सांसारिक विचार और सुषमना परमार्थ अर्थात मुक्ति के विचार हैं और हमारा शरीर चादर है।

आठ कंवल दल चरखा डोलै, पांच तत्त गुन तीनी चदरिया।
सांईं को सियत मास दस लागे, ठोक ठोक के बिनी चदरिया।

हमारे मन के अन्तर कभी रजोगुणी, कभी तमोगुणी और कभी सतोगुणी विचार होते हैं। हम इनमें ही फंसे रहते हैं।

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी, ओढ़ के मैली कीन्ही चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीन्हो चदरिया।

मेरी इस चादर को आप सत्संगियों ने साफ कर दिया। मैं धर्म से कहता हूं कि मैं आपका उतना ही

मान करता हूं जितना हजूर दातादयाल जी महाराज का। उन्होंने जो कुछ मुझे इशारों में कहा आप लोगों ने उसको क्रियात्मिक रूप दिया। मैं गुरु नहीं हूं और न ही मुझे गुरु बनने की लालसा है। मैंने किसी को नाम दान नहीं दिया मगर मेरे अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो कुछ मैं कहता हूं वही मेरा नाम दान है। ग्राम घुमाण जिला गुरदासपुर का एक सत्संगी भानसिह मेरे पास आया करता था। अब तो वह चोला छोड़ गया है। उसने मुझे बताया कि हजूर बाबा जैमल सिह जी हमारे गांव में आया करते थे। उस समय मेरी आयु १५-१६ साल की थी। उन्होंने एक बार फरमाया था कि जब पंजाब में आग बरसेगी तो उस समय जो सन्त सत्गुरु आयेगा वह नाम नहीं देगा और अपने बचनों और अपनी दृष्टि से जीवों का उधार करेगा। क्यों कि आप नाम नहीं देते इसलिए मैं आपको सन्त सत्गुरु मानता हूं।

अब युग बदल गया। राधास्वामी मत जीवित गुरु को मानता है। आप लोग भ्रम में मत आओ मैंने आपको सन्तमत की सचाई वर्णन कर दी। जो

भी उठा उसने दस बातें इधर उधर को तुम लोगों को बताईं और तुम लोगों को लूटना आरम्भ कर दिया । राधास्वामी का अर्थ क्या है ?

राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहचान ।

राधास्वामी धाम या राधास्वामी नाम तुम्हारे अन्तर में है बाहर नहीं है। राधास्वामी मत आया था जीवों को आज़ाद करने के लिए मगर अब यह भी एक संप्रदाय बन गया है। जिस प्रकार और संप्रदाय हैं ऐसे ही अब यह बन गया है। इस संसार में लूट पड़ी हुई है :—

जगत में कैसी लूट पड़ी ।
माता कहे पूत है मेरा, भाई भाई बनावे ।
घर की तिरिया तन से लिपटी, पति कह रार मचावे ।
बहन वीर कह हंस मुसकावे, मुस के धन ले जावे ।
पुत्रवधू कहे सुसर सियाना, झूठे भाव दिखावे ।
राजा कहे मेरी है परजा, करे कमाई उद्यम ।
मक्खन काढ़ मुझे दे उत्तम, पिये छाछ नित मध्यम ।

संसार में गृहस्थियों पर कई प्रकार के सरकारी कर लगे हुये हैं और हम महात्मा लोग भी तुम लोगों पर कर लगाते हैं। यदि मुझे ज्ञानदाता समझ कर कोई आदमी मेरी सेवा करता है तो मैं उसे ग्रहण करने

को त्यार हूं क्योंकि जब तक कोई सेवा नहीं करता उसे मिलता कुछ नहीं लेकिन यदि कोई यह समझ कर मेरी सेवा करता है कि बाबा फकीर मेरे अन्तर प्रकट हुआ और मेरा यह काम कर गया तो क्योंकि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता इसलिए उस सेवा को ग्रहन करने के लिए मेरा हृदय नहीं मानता । मैं तुम लोगों को यह बताता हूं कि सचाई क्या है और तुम लोगों को क्या बताया जा रहा है। इस परदे में रखकर तुम लोगों को लूटा जा रहा है। मैं तुम लोगों को इस लूट से बचाना चाहता हूं। खुशी से, समझ से और ज्ञान की दृष्टि से जो इच्छा हो मेरी सेवा करो। यह लूट नहीं है और न ही धोखा है। न कोई देता है और न कोई लेता है। यह सब अपने २ कर्म का फल है।

पण्डित दान दक्षिणा मांगे, साधु भिक्षाधारी।
तीरथ मठ मूरति और मन्दिर, लूटें लूट की बारी।
मरते समय आग यह बोली, इसे जला खा जाऊं।
मिट्टी कहे गाढ़ दे मुझमें, अपना अंश बनाऊं।
हवा सुखावे पानी धुलावे, सिमटावे आकासा।
चकित हुआ यह देख के लीला, लूट का अजब तमासा।
मैं हूं कौन कौन है मेरा, इसकी समझ न आई।

देख लूट का जग विस्तारा, लूट हुई दुखदाई ।
कभी कभी भूल भरम फंसकर, लूट का मर्म न पाऊं ।
लूट लूट के लुट गया सारा, लूट का मर्म न पाऊं ।
राधास्वामी की संगत पाई, समझ लूट की आई ।
व्याकुल चित चरनों में आया, ली सतगुरु शरनाई ।

मुझे यह मर्म नहीं मिलता था । मुझे यह भेद किसने दिया ? राधास्वामी मत में आया । गुरु की दया हुई । आप लोगों की सेवा की आज्ञा मिली । तब मुझे अपने रूप की समझ आई ।

मैं हूं सतपुरुष का दासा ।
जग में आया देखिन तमाशा ।

गुरु मिले और उन्होंने भेद बता दिया और तब मैं इस लूट से बचा और अब मैं वही भेद तुमको बता रहा हूं

राधास्वामी की संगत पाई समझ लूट की आई ।
व्याकुल चित चरनों में आया ली सतगुरु शरनाई ।

जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है यदि मैं उनको सचाई नहीं बताता तो वे तो अज्ञान के कारण मुझे रुपया पैसा देंगे तो यदि मैं उनसे रुपये लेलूं तो मैं डाकू हुआ कि न हुआ क्योंकि मैं तो गया नहीं । यह है गुरु का कर्तव्य ।

"सब को राधास्वामी ।"

तृष्णा

लेखिक :—सेठ दुर्गादास सहिब, चण्डीगढ़।

राधास्वामी। लोभ लालच, तृष्णा, इच्छा सदा बढ़ती रहती है जगत की बासना फैलती है। एक इच्छा पूरी हुई दूसरी इच्छा पैदा हो गई। यह सिद्धान्त है। कोई जीव इस बासना पर कंट्रोल नहीं कर सकता है। सब जीव अपनी २ बासना के अधीन होकर संसार में काम कर रहे हैं। बासना आगे २ दौड़ती है और जीव इसके पीछे २ चलता है और अपनी बासना पूरी कर नहीं पाता। यह संसार का विचित्र खेल है।

पेट में रोटी नहीं है। भोजन की इच्छा हुई, भोजन मिल गया। अब कपड़े की इच्छा पैदा हुई, कपड़ा भी मिल गया। अब झोंपड़ी बना ली। फिर धन की इच्छा हुई। कारोवार चलाया, धन मिल गया। कार की इच्छा पैदा हो गई अब कोठी बनाने का विचार आया। वासना से वासना निकलनी आरम्भ हो गई। फिर इसका अन्त नहीं है। बासना

की उन्नति हो रही है। यह अच्छी बात है। बासना को खूब फैलाओ लेकिन इसपर कंट्रोल रहे। जब चाहो, बासना को रोक सको तो ठीक है अन्यथा विपत्ति का कारण बनेगी। संसार मिलेगा, परमार्थ नहीं मिलेगा।

निनानवे का फेर आपने सुना होगा। बड़ा अच्छा उदाहरण है। एक दुकानदार हर रोज अपनी (बिकरी) घर ले आता। घर पर आकर हिसाब किताब करता। रोकड़ मिलाने में देरी हो जाती। कभी रोकड़ कम हो जाती तो सोचना पड़ता। किसी को नकद दिया गया, याद करता। हर रात इसके एक दो घण्टे लग जाते। देरी से भोजन करता। प्रतिदिन स्त्री यह तमाशा देखती रही। एक दिन वह कहने लगी। पड़ोस में एक परिवार रहता है। वह वेचारा मज़दूरी करता है वड़ी शान्ति से रहते हैं। मैंने कभी इनके घर शिकायत नहीं सुनी। समय पर भोजन करते हैं। आराम से जीवन व्यतीत करते हैं। हमारे पास धन भी है फिर भी घर में शान्ति नहीं है। दुकानदार ने कहा कि पड़ोसी को निनानवे का फेर अभी नहीं पड़ा। इसलिए इसकी यह दशा

है। स्त्री ने पूछा वह क्या होता है तो दुकानदार ने कहा कि यह रुपयों की थैली चुपके से इसके घर फैंक दो। फिर तमाशा देखना। बीबी ने ऐसा ही किया। थैली रुपयों की पड़ोसी के घर रख आई। पड़ोसी थैली पाकर बड़ा खुश हुआ। खोली। रुपये गिने गये तो इसमें ननानवे रुपये निकले। विचारा कि इसको एक सौ रुपया पूरा कर दिया जावे। मज़दूरी से कुछ बचाना आरम्भ कर दिया। घर का खर्च न चले। जब सौ रुपयें पूरे हो गये तो 101/- रुपये इकट्ठे करने का विचार बढ़ता गया। बचत करते रहे। निर्वाह कठिन हो गया। घर मैं झगड़ा होने लगा। प्रतिदिन लड़ाई झगड़ा। वह शान्ति जाती हुई।

कबीर साहिब फरमाते हैं।

सौ पापन का मूल्य है, एक रुपया रोक।
साधू होय संग्रह करे, मिटे न शंशय शोक।

धन इकट्ठा करो। संसार में लक्ष्मी बिना निर्वाह नहीं है। इसलिए खूब कमाओ। लेकिन अपनें धन को ठीक ठंग से खर्च करो। दान दो। किसी निर्धन की सहायता करो। अपना धन अच्छे और शुभ कामों पर खर्च करो तब तो धन का लाभ है अन्यथा यदि

ननानवे के चक्कर में पड़ गये तो इस चक्कर से निकलना कठिन हो ज़ायेगा। खुशी और सुख लोप हो गये। देख लो विचार कर लो।

आजकल नगर में एक महापुरुष आये हुये हैं। इनके पास इनके भक्त दर्शनों के लिए जाते हैं। अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं। महापुरुष के आगे अपनी शंकायें प्रस्तुत करते हैं। इनका अशीर्वाद लेते हैं। एक सज्जन इनके पास गये। प्रार्थना की कि मैं एक गरीब दुकानदार हूं कठिनता से निर्वाह होता है। लड़की नौजवान है। इसके विवाह कि चिन्ता है। लड़का नौज़वान है। इसका भी विवाह करना है। हर समय इसी सोच और चिन्ता में रहता हूं। जीवन कैसे व्यतीत होगा। बड़ा दुखी हूं। महाराज जी ! आप मुझ पर दया करें। मेरे दुख दूर कर देवें मैं आपका सेवक हूं।

तो महापुरुष पूछने लगें। भाई ! लड़की के विवाह पर कितना रुपया लगेंगा। दुकानदार नें उत्तर दिया बीस हज़ार रुपया और लड़के के लिए दुकानदार नें उतर दिया, बीस हज़ार रुपया। तो दुकानदार नें उतर दिया। नहीं महारज ! दुकान

को चलाने के लिए रुपये की आवश्यकता होगी। इसके लिए कितना चाहिए दस हज़ार। वस अव काफी है। नहीं महाराज एक मकान वनाऊंगा। इस मकान के लिए पचास हज़ार रुपया चाहिए। महापुरुष फरमाने लगें। बहुत अच्छा। आपको एक लाख रुपया चाहिए बहुत अच्छा। वहुत जल्दी मिल जायेगा। आपके सब काम हो जाएंगे। चिन्ता मत करो। विश्वास रखो। वह सर्वशक्तिमान है। लेकिन एक बात तो बताओ, जब आपको एक लाख रुपया मिल जावे। इसके बाद जो आप कमाई करोगे, क्या आप वायदा करते हैं कि वह सब हमको दे दिया करोगे।

दुकानदार सुनकर चकित हो गया। इधर उधर देखने लगा कुछ उतर न बन आया। क्या उत्तर दें, कैसे वायदा करे कि वह अपनी सब कमाई महात्मा जी को दे दिया करेगा इतना उत्साह कहां से लाये। लाख रुपया मिल जाये। यह बात स्वीकार है। इस पर खुश है लेकिन्न इससे आगें जानें को त्यार नहीं है।

यह है ननानवे का चक्कर। भई इस चक्कर में मत पड़ना धन आपका है। आप धन के अधीन नहीं हैं। आप धन के मालिक बनो। इसपर सवारी करो। खुश रहोगे सुखी रहोगे।

मेरा पल्ला न पकड़ो जी, गुरु का दास बना।
सोवत जागत्त कभी न विसरूं, नाम तो जीवन सास बना।
मान मनि अपमान नहीं मन, दीन हीन जीवन घासव बना।
राधास्वामी चरण शरण बलिहारी, आम नहीं अब खास बना।

"सब को राधास्वामी"

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

होशियारपुर

15-11-75

प्यारे राजेन्द्र सिंह ! राधास्वामी

तुम्हारा दुःख भरा पत्र पढ़ा, सुनो ! मैंने अपने आपको संत सत्गुरु वक्त कहा है ! गुरु नाम है ज्ञान समझ विवेक का। गुरु की दया क्या है ? जब ऐसी दुर्घटनाएं मनुष्य के साथ घटती हैं, यह तो उनको अपने अपने कर्मों का फल मिलता है। अगर सत्संग में ज्ञान मिला हुआ हो तो इंसान अपने कर्मों को ठीक कर सकता है और साथ ही अपने को समझ कर जो अशान्ति, दुःख वा रोना पीटना होता है उसमें कमी आ जाता है। लोगों नें गुरु के रुप को नहीं समझा।

गुरु धरा शीश पर हाथ मन तू क्यों सोच करे।
गुरु रक्षा हरदम संग उनसे काल डरे।

काल नाम है समय का और आदमी के मन का, जिसको सत्संग से गुरु ज्ञान मिल जाता है। वह समय की हालत के बदलने में चिन्तित नहीं होता और मन में जो दु:ख सुख होता है उसको वह कम महसूस करता है। यह है गुरुमत।

अब सोचो ! विश्वामित्र ने दुश्मनी से वशिष्ट की सारी सन्तान मार दी। वसिष्ट ने कर्मभोग समझकर कोई दु:ख नहीं मनाया। दाता दयाल का एक शब्द है। किताब से पढ़ लो।

नर भोगे बारंबार अवश्य फल कर्म किये का।
तू सोच समझ पग धर मर्म जग जनम जिये का।

पाण्डवों के रक्षक श्री कृष्ण ब्रह्म के अवतार थे। क्या वे उनका बारह वर्ष के बनवास या उनके कष्ट निवारण कर सके ? पाण्डवों पर कर्माअनुसार साड़सति आयी हुई थी। कर्म भोग उनको भी भोगना पड़ा। मगर कृष्ण उनके रक्षक थे इसलिए उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, रोये पीटे नहीं, हौसला नहीं हारा। मेरे विचार में जो होना था हो गया। अब क्या होगा ?

मालिक पर विश्वास करो, डरो नहीं। यदि कुछ आर्थिक सहायता की आवश्यकता हो तो मन्दिर आपकी 20 या 25 रुपया मासिक मदद कर सकता है।

आपका

फकीर

नकल पत्र दिनांक ८ जून १९७६ जो कि हुज़ूर परम दयाल जी महाराज ने विरजीनिया (Virginia) अमेरिका से लिखी।

प्यारे प्यारे भक्त जी, मेरी पहुंचे आपको राधास्वामी।
जिन्दगी गुज़र रही है मेरी, बनके अकामी और निष्कामी।
मौज लाई थी चोले फकीर में, ख्वाहिश थी मिले अनामी।
दाता की है दया मुझपर, दिया काम था करने को।
इस काम से मिट गये भरम, मेरे और पाया देश दवामो।

दो दिन बाद दाना पानी California लिए जा रहा है। क्यों? पता नहीं।

जिन्दगी गुज़र रही है मौज पर और मौज का है आसरा।
क्या कहूं मैं, क्या हूं करता, यह नहीं मैं जानता।

एक समाचार पत्र का Cutting और एक पत्र जो एक व्यक्ति ने The Secret of Secrets नामी किताब पढ़कर लिखा है। भेज रहा हूं। इनको जो चाहो करो। यदि इनका अनुवाद मानव मंदिर में भेज सको तो भेज देना या अंग्रेज़ी में ही प्रकाशित करा देना। साथ ही D. D. Kapila साहिब

और प्रोफैसर भगत राम साहिब को यह पत्र दिखा देना। यह उनकी दया और परिश्रम का फल है। Credit उनको जाना चाहिए मुझे नहीं।

यहां पर खर्च बहुत हो रहा है। लेकिन मेरा नहीं जो कुछ बाहर से आता है वह लंगर और किराया आदि पर खर्च हो रहा है। १९७७ में अमेरिका में whole worled Religions Conference होने का निश्चय हुआ है। डाक्टर I. C Sharma भी उसके Director होंगे। इसलिए अगले साल फिर अमेरिका आऊंगा। अब मैं एक पत्र California से लिखूंगा और 27-6-76 को न्यूयार्क से दिल्ली आ जाऊंगा।

भक्त जी और सत्सगियों! मैं खुश हूं कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का ऋण कि "शिक्षा को बदल जाना फकीर" बदल चला। पता नहीं ठीक किया या ग़लत किया। परदा रखता तो मन्दिर ज़रा ज्यादा पैसे वाला हो जाता। अब मौज है मेरी सेहत ठीक है।

My male mammy (Dr. Paras Ram) is quite healthy. She cooks for me and feeds me like a mother to child

अमेरिका के एक दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित हज़ूर परम दयाल जी महाराज के जोवन और उन की शिक्षा पर एक झलक

Faqir Dayal :

What They See Is an Illusion

The Virginian-Pilot

TIDEWATER LIVING
A 6 Monday, June 7, 1976

By CAMMY SESSA
Virginian-Pilot Staff writer

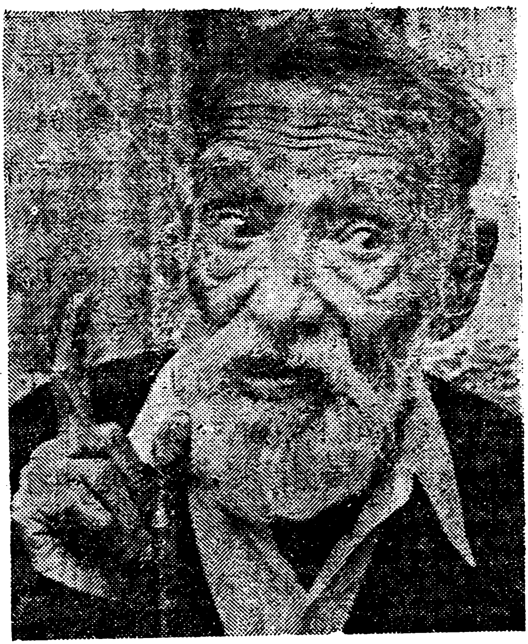

FAQIR DAYAL
Indian mystic, author

VIRGINIA BEACH :—Faqir Dayal, 90, is a little man barely 5 feet tall but he carries a big name and a heavy responsibility.

Known as "His Holiness, Param Sant Param Dayal Pandit Faquir Chandji Maharaj," he claims his purpose in life is "to change the world's thoughts."

Dr. Paras Ram Aggarwal, left, and Faqir Dayal are house guests of Dr. I. C. Sharma, right-

"His name means 'supreme saint and mystic,'' said Dr. I. C. Sharma, a visting professor of philosophy at Old Dominion University and the author of several books and articles on philosophy, religion, politics and scriptures. Sharma's latest book, "Karma and Reincarnation" is published by Harper and Row (1975).

Sharma explained that Dayal acquired the title of "his holiness" from thousands of followers in India and other parts of the world including the United States.

"Many hundreds of pepole have experienced the power of his spiritual impact,'' said Sharma. "Many say he appears to them in time of need; some say that he has healed and cured them; and many events whichseem to be miracles have bcen credited to him although he does not claim to be personally aware of them."

Dayal has been staying at Sharma's Virginia Beach home since his arrival from Hoshiarpur, India, two weeks ago. He has given many lectures on philosophy and meditation. He intends to leave Thursday.

Dayal doesn't fit the image of the customary Indian sage. He wears no special robes nor priestly garments and he lectured for a short time recently with a woolen cap pulled down over his ears. "My experience has taught me that humanism is much better than spiritualism he said.

Paras Ram Aggarwal, a medical doctor, accompanied Dayal on his trip to Tidewater. "He (Dayal) is my spirtual master," said Aggarwal "I have been attending him for 19 years."

"I am an old man," said Dayal. "I could be subject to many aliments so I need a doctor with me."

But there is nothing frail about Dayal despite his age. He bends his knees with agility as he crosses his legs, yoga fashion. He sits perfectly straight, not leaning on a backrest, reads without glasses, and speaks with a steady voice.

He raised that voice in vehemently when he denied knowledge of any miracles. He pointed to a note Book and said, "Carefully put this down. I have no knowledge of these things; if I appear to someone, I swear, I am not aware of it. It is in their own mind... ... .. I am convinced that what they see is an illusion or suggestion of me It is not me; it is their own faith and faith is the essence of all beliefs and miracles"

Dayal stopped, lit a cigarette, adjusted his hearing aid, and continued :

"I have realized that when people belong to different religions; they honestly feel the presence of their spiritual ideal whether it is Krishna, if they are Hindu, Christ, if they are Christians, Bhuddha, if they are Buddists and so on.

"Actually, their experiences are not objective. it is a person's inner attitude that makes him feel his particular master's presence.

"No one comes from the outside," he added. "It is because of training, impressions, and suggestions and limiting the mind that a practical form appears and helps them," Dayal said. "That's why they are so sure of their faith But this also creates problems.

"As a result of this, narrow-mindedness and ignorance, the followers of each religion have brought about division and created walls and wars between sects and religions; God is above the universal mind.

"From this I have concluded that the real God is not in the mental sphere," he added. "That man which appears to people is the universal mind. The real God is ultrasound and light "

Dayal said he promised his own guru or spiritual father, Maharishi Shiv Vrat Lal. who died in 1939 that he would carry this knowledge of truth to the world. "That's why as an old man, I must be travelling even though it is more comfortable at home," said Dayal.

Dayal says he does not initiate his followers into meditation.

"A man who does meditation will get only that thing that which is in his subconscious mind," he said "Without warning to keep the mind pure, meditation can be dangerous. Mind must be pure and thoughts good to meditate properly. I cannot know what thoghts are in the minds of my followers, so I do not advise them to meditate."

Dayal does meditate himself most of the day. He rarely sleeps and eats just a small portion of food in the morning and then drinks milk and other liquids during the day. He says he needs neither food nor rest to sustain his energy because he meditates completely.

He accepts no money from his disciples, "because I do live with my son and he supports me."

Dayal has founded an ashram (yoga retreat house), medical and dental clinics, and an eye hospital that are run by his disciples. "All the services are free; people can come and be attended to." The doctors and workers give their time for love of him, Dayal says.

Dayal was married at 13, Served in the British

army, and was employed by the Indian railroad as a stationmaster.

He Said that many Indian gurus have come to the United States to enlighten, but they are failling

"They (the gurus) are taking money and then not solving any problems," he said.

हजूर परम दयाल जी महाराज ने थोड़ा समय हुआ एक **(The Secret Of Secrets)** अर्थात रहस्यो का रहस्य नामी पुस्तक अंग्रेजो में लिखी। उस को अमरीका के लोगों ने पढ़ा। एक सज्जन ने पुस्तक के विषय में अपने विचार प्रगट किये हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

3315 Powhatan Street.
Baltimore, Maryland 212 6
June 3, 1976

His Holiness Parma Sant Param Dayal, Faqir Chand ji Maharaj

Obeisances to You. I bow at your Holy feet. I have just been given the supreme favor of reading the **Secret of Secrets.** My gratitude knows no bounds. My heart overflows with love. It is true. It is true. It is true. Oh, seekers of Eternal Truth, hear Faqir Chand ji Maharaj.

Do not think me immodest if I confirm what his Holiness reveals. It is none of my doings if it is ordained to be so. The Eternal Master has so decreed it. As before the Eternal

One deals briefly with this one. In a flash all that was shown me in a violen and intense disillusionment (enlightenment) years ago is confirmed in this price-less little book in the only language suited to conveying the penultimate-namely, simple, plain language sechored in the immense heart of the experiences of a Param Sant, a true Maharaj.

Nowhere else have I seen such flaming inspiration of truth. Nor do I hope to see such.

Meeting you has been the most profonnd of events.

with unbounded gratitude and love
One who sat with you for a few
minutes along the way,

S/d

Fread clifton

मेरा कर्म

कल सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दियाया, उसने कहा कि आंखो का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/- रुपया की धन राशी प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा की ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको पचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी। वह तलाश मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिए मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब मैं पंथ में आया था और मैंने भी यह प्रण किया था कि अपना

अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या ग़लत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने में विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनियां को पीछे लगाने के लिए कही गई, उनका मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्म जीवन है वह परस्पर प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन हैं। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा

शक्ति अनाथों, अन्धों और ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होमयोपैथिक दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते हैं, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता, जिस प्रकार मेरा रूप लोगो के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता, मान चाहता, ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबे जो मानवता मन्दिर में छपती है मैंने उन का कोई मूल्य नहीं रखा। मन्दिर के हसाब में प्रकाशन पर इस वर्ष के दस महीनों में 27000/ रुपया व्यय हो चुका है। बिना मूल्य साहित्य बाटने का कारण मेरा ब्रह्मण के

घर का जन्म है। ब्राह्मण के लिए वेद बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंनें इस की कोई कीमत नहीं रखी। रात को सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा ? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की अत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा-फेरी नहीं होती। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मलिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिन की रुची इस के पढ़नें में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी जिन्दगी बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या ग़लत है। मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझें ले चल। अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनो हस्तो को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **TRUTH ALWAYS WINS (English)**
   Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj.

2. अनुभवसार (हिन्दी)
   लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रसड़ा।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी)—मासिक पत्रिका।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

Regd. No. 26265/74

MANAV MANDIR

P—Hsp—7.

1283.

ADDRESS

Sri A. Hanmanth Rao.

H.No. — 10-3-1948

Humayun Nagar

Hyderabad 28.

A.P.

500028

From :

MANAVTA MANDIR

SUTEHRI ROAD,

HOSHIARPUR.